# राजस्थान की चित्रकला

_/_/_

राजस्थानी चित्रकला के प्रारंभिक प्रमाण चट्टानों पर बने चित्रों से मिलते हैं जिन्हे "शैलाचित्र (Rock Penting)"

V.S. वाकणकर 1953
- दर्रा (कोटा) - चम्बल
- झालावाड़ - कालिसिंध
- आबू की पहाड़ी
- ईडर (गुजरात)

शैल चित्रों से संबंधित अन्य स्थान :-

1. बांका (भीलवाड़ा)
2. कोल्वी की गुफा (झालावाड़)
   ↳ बौद्ध धर्म से संबंधित चित्र - "अजन्ता / एलोरा" Raj. की
3. बैराठ (जयपुर)
   ↳ सर्वा. शैलाचित्र प्राप्त - "प्राचीन समय की चित्रशाला"
4. गरदड़ा (बूंदी)
   ↳ Bird Rider Rock Penting मिली हैं
5. दर (भरतपुर)
   ↳ पशु-पक्षियो के सर्वा. शैलाचित्र
6. आलनिया (कोटा)
   ↳ यहां शैलाचित्रो की खोज का श्रेय - जगत नारायण

चित्रकला का उद्‌भव व विकास →

जन्म - "मेवाड़"
- अजंता शैली का प्रभाव
- प्रारंभिक शैली (प्रभाव) - जैन, गुजरात शैली का
- 1500 ई. स्वतंत्र रूप से उद्‌भव हुआ कुछ समयबाद
- मुगलो का प्रभाव पड़ा
- 17,18 वी सदी की काल - "स्वर्णिम काल"

/ /

राजस्थानी चित्रकला का जनक - महाराणा कुंभा
आधुनिक चित्रकला का जनक - कुन्दनलाल मिस्त्री

राजस्थानी चित्रकला का नामकरण -

1. राजपुत चित्रकला - आनन्द कुमार स्वामी
↳ 1916 Rajput Penting [ राजस्थानी चित्रकला
[ पहाड़ी क्षेत्र की
समर्थक - O.C. गांगुली, हेवेल

2. राजपुत कला - W.H. ब्राउन
↳ Indian Penting

3. हिन्दु चित्रकला - NC मेहता
↳ Study in indian Penting

4. राजस्थानी चित्रकला - रायकृष्णदास
↳ भारत की चित्रकला

प्राचीन चित्रकार -
1 श्रीरंगधर / श्रीधर -
- तिब्बती इतिहासकार तारानाथ द्वारा 7 वीं सदी के श्रीधर का उल्लेख किया गया है
- जो मरुप्रदेश के राजा शील का दरबारी चित्रकार था
- "राजस्थान की सबसे प्राचीन चित्रकार"
- इनके द्वारा बनाये गये चित्र 'यक्ष चित्र' कहलाया जो उपलब्ध नही हैं।

पश्चिमी भारत की यक्ष चित्रशैली का जनक
↳ श्रीधर।

सबसे प्राचीन चित्र →
- राजस्थान के प्राचीन चित्र "जैनो के आगम ग्रंथो चित्र" के भूला सूत्रो पर बनाए गए -

1. ओघनिर्युक्तिवृति सूत्र चूर्णी - भद्र बाहू का ग्रंथ

2. दशवैकालिक सूत्र चूर्णी - शय्यम्भ सूरी का ग्रंथ

ओघनिर्युक्तिवृति + दशवैकालिक
- Raj के सबसे प्राचीन चित्र
- जैनग्रंथ भण्डार (JSM) में स्थित
- 11 वीं सदी आलेखकार पाल्हीटील द्वारा बनाए गए
- भारतीय चित्रकला के द्वि. स्तम्भ

3. श्रावकप्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी - ताड. के पतो पर बना Raj का पहला
- राजस्थान का उपल. प्राचीन चित्र
- मेवाड़ चित्रशैली का प्राचीन चित्र

4. उत्तराध्यायन सूत्र चूर्णी - मारवाड़ चित्रशैली का सबसे प्राचीन

चित्रशैलीयों के विकास में विद्वानो का योगदान -
डॉ मोतीचन्द्र
R.K. वशिष्ठ ] मेवाड़ चित्रशैली

डॉ श्रीधर अंधारे - देवगढ़ चित्रशैली (मेवाड़)

डॉ फैय्याज अली
एरिक डिकिन्सन ] किशनगढ़ चित्रशैली

प्रमोद चन्द्र
W.G. आर्चर
ब्रजेन्द्र सिंह ] हाड़ौती चित्रशैली (कोटा - बूंदी)

_/_/_

चित्रकला से सम्बंधित संस्थाएं -

1. अंकन - भीलवाड़ा
2. धोरा ] 
3. चितेरा ] जोधपुर
4. जैनग्रंथ भंडार - जैसलमेर

5. टखमण - 28 ]
6. आज ]
7. प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप ] उदयपुर
8. तूलिका कलाकार परिषद ]
9. सरस्वती भण्डार ]

10. आयाम ]
11. कलावृत ]
12. पैग ]
13. मानस ] जयपुर
14. हस्ताक्षर ]
15. क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप ]

Note - 1. देवगढ़, केलवा, शाहपुरा, बनेड़ा, बागौर, बेगूं आदि ठिकानो की चित्रकला मेवाड़ चित्रशैली की उपशैलिया मानी जाती है।

2. सिरोही, घाणेराव, जुनिया, रिया आदि मारवाड़ चित्रशैली की उपशैलिया है

3. झीलाय, ईसरदा, शाहपुरा, सामोद जयपुर चित्रशैली की उपशैलिया है

__/__/__

चित्रकला स्कूल

| ↓ | ↓ | ↓ | ↓ |
|---|---|---|---|
| मेवाड़ | मारवाड़ | ढूंढाड़ | हाड़ौती |
| उदयपुर | जोधपुर | जयपुर | बूंदी |
| नाथद्वारा | किशनगढ़ | आमेर | कोटा |
| चावण्ड | बीकानेर | अलवर | झालावाड़ |
| देवगढ़ | जैसलमेर | उणियारा | बासी दुग्गारी |
| शाहपुर | नागौर | शेखावटी | |
| | जोधपुर | | |

I. मेवाड़/उदयपुर चि: शै: →

प्रादुर्भाव काल - महाराणा कुंभा

स्वर्णिम काल - जगतसिंह I

रंग - लाल- पीला

वृक्ष - कदम्ब वृक्ष

पशु - घोड़ा, हाथी

पक्षी - चकोर पक्षी

महिला चित्रण - मछली (मीन) जैसी आंखें

- तरुण अवस्था के चित्र

विशेष - Raj की सबसे प्राचीन चित्रशैली

- अजंता शैली का प्रभाव

- विकास के लिए जगतसिंह I ने उदयपुर के राजमहलों में "चितेरों री ओवरी" नामक कलाविद्यालय बनवाया। (तस्वीरों रो कारखानों, पोथी ग्रंथों का संग्रह)

- आलस बेसिल ग्रे के अनुसार मेवाड़ चित्रशैली का प्रारंभिक स्वरूप प्रतापगढ़ में देखने को मिलता है जहां चोर पंचा शिखा चित्र बनाया गया।

- विषय वस्तु / चित्र -

(i) श्रावकप्रतिक्रमण सूत्रचूर्णी -
- सबसे प्राचीन चित्र
- 1260 रावल तेजसिंह के समय चित्रकार कमलचन्द्र द्वारा आहड़ में ताड़ के पत्तों पर बनाया गया

(ii) सुपासनाह चरियम (सुपार्श्वनाथ चरित्रम)
- मोकल के समय चित्रकार हीरानन्द ने देलवाड़ा में बनाया

(iii) कल्पसूत्रचित्र - मोकल के समय चित्रकार पानसार द्वारा बनाया गया

(iv) परिजात अवतरण चित्र - उदयसिंह के समय चित्रकार नानाराम द्वारा बनाया गया

(v) जगतसिंह I के समय चित्रकार साहिबदीन ने रसिक प्रिया, आदिपुराण, गीतगोविंद आदि पर चित्र बनाए और चित्रकार मनोहर ने रामायण चित्र बनाया।

(vi) जयसिंह I के समय मेवाड़ चित्रशैली में सर्वाधिक लघु चित्र बनाये गये।

(vii) कलिला दमना व मुल्ला दो प्याजा के लतीफे → सवाईसिंह II बुसडीन

↓ विष्णुशर्मा के ग्रंथ "पचंतंत्र" के फारसी अनुवाद की एक कहानी के दो पात्र हैं।

पचंतंत्र का दो बार फारसी अनुवाद - 1. अयारे दानिश
↳ अबुल फजल द्वारा
2. अन्वारे सुहेली
↳ हुसैन वाईस काशिफी

__/__/__

अन्य चित्र -

1. रसिका अष्टक
2. शुकर बलत्स्य दौत
3. राग - रागिनी

चित्रकार -

शाहीबद्दीन, सुरुद्दीन, कमलचन्द, हीरानन्द
बाबा राम, घनराम, कृपाराम, मनोहर, जीवा

2. नाथद्वारा चि. शै. →

प्रादुर्भाव काल ] राजसिंह प्रथम
स्वर्णिम काल ]

रंग - सफेद श्वेत गुलाबी सुनहरा
वृक्ष - केला
पशु - गाय
पक्षी - मोर
महिला चित्रण - दासी के समान, चकोर पक्षी के समान आँखे
पुरुष चित्रण - वल्लभ सम्प्रदाय के गुसाईं पण्डितो के चित्र
चहरे पर तिलक, सिर पर चोटी

विशेष -

- वल्लभ चित्रशैली" भी कहा जाता है
- ब्रज शैली का प्रभाव दिखाई देता है

विषय वस्तु / चित्र -

- वल्लभ सम्प्रदाय पर सर्वा. चित्र बनाए गए
- कृष्ण की बाल लीलाओ के चित्र बनाये गए
  (i) आँखमिचौली, (ii) यमुना स्नान प्रमुख है।
- कृष्ण की बाल लीलाऐ देखकर प्रसन्न होते देवताओ के चित्र बनाए गए।
- पिछवाई चित्रण प्रमुख विशेषता।

__/__/____

चित्रकार -
रामचन्द्र, पुरुषोत्तम, नारायण, उदयराम, धासीराम, तुलसीदास, चतुर्भुज

" महिला चित्रकार -
कमला, इलायची

3. चावण्ड चित्र शैली →
प्रादुर्भाव - महाराणा प्रताप
स्वर्णिम - अमरसिंह I

विषय - वस्तु / चित्र - 1. ढोला - मारू चित्र
└प्रताप के समय चित्रकार नसीरुद्दीन
2. रागमाला - अमरसिंह "
3. बारहमासा - " "

4. देवगढ़ चित्र शैली →
- वर्तमान राजसमंद स्थित देवगढ़ 16 ठिकानों (मेवाड़ रियासत) में एक था
- स्थापना - मेवाड़ महाराणा जयसिंह के समय
द्वारिका चुण्डावत दास द्वारा

- द्वारिका दास का समय इस चित्रशैली का प्रादुर्भाव + स्वर्णिमकाल
- प्रकाश में लाने का श्रेय - डॉ. श्रीधर अंधारे

- मेवाड़ + मारवाड़ + ढुंढाड़ चित्रशैली का प्रभाव

- "अजारो की ओबरी, मोती महल" के भित्ति चित्र इसके प्रमुख चित्र हैं।

- चित्रकार - कंवला, चोखा, बैजनाथ, बगता, हरचंद, नगा

4. शाहपुरा चि. शै. →
- फंड चित्रण के लिए प्रसिद्ध
- जिसके लिए शाहपुरा का जोशी परिवार प्रसिद्ध

(मारवाड़ स्कूल)

1. मारवाड़ / जोधपुर चित्रशैली →
   प्रादुर्भाव - मालदेव
   स्वर्णिम काल - जसवंतसिंह I
   रंग - पीला - लाल
   वृक्ष - आम
   पशु - ऊँट, कुत्ता
   पक्षी - चील, कौआ, खंजन

महिला चित्रण - बादाम जैसी आँखें, प्रौढावस्था के चित्र
पुरुष चित्रण - ऊँची, अलकृंत पगड़ी, राजशीवैभव के वस्त्र आभूषण

विशेष - मोटाराजा उदयसिंह के समय इस पर सर्वप्रथम मुगल प्रभाव पड़ा
- सर्वा. मुगल प्रभाव - जसवन्तसिंह I के समय
- मानसिंह के समय - नाथसम्प्रदाय का सर्वा. प्रभाव
- तख्तसिंह " - यूरोपिय प्रभाव पड़ा

विषय - वस्तु / चित्र
1. उत्तराध्याय सूत्रचूर्णी - मालदेव के समय इस शैली का चित्रित सबसे प्राचीन चित्र
   - वर्तमान में बड़ौदा में सुरक्षित
2. चौखला महल - भित्ति चित्र मालदेव के समय
   - मालदेव की सैनिकरुचि को दरसाने वाले वीर रस प्रधान चित्र बनाए गए
   जैसे - राम-रावण युद्ध के चित्र, सप्तसती चित्र

3. सूरसिंह - ढोला-मारू, भागवत-पुराण प्रमुख चित्र बने।

4. गजसिंह - रागमाला प्रमुख चित्र बना
गजसिंह के सामंत पाली के विट्ठलदास चाम्पावत
के आग्रह पर चित्रकार वीरजी ने बनाया

5. जसवंत सिंह I - प्रेमकहानियो पर सर्वा. चित्र बने जैसे
ढोला मरवण, कल्याण रागिणी, रुपमती - बाजबहादुर, सोहणी-महिवाल, कृष्ण-रुक्मणी, अजली-जेठवा

6. अभयसिंह - चित्रकार डालचन्द्र ने नृत्य देखते हुए
अभयसिंह का चित्र बनाया

7. मानसिंह - नाथपुराण, शिवपुराण, दुर्गापुराण से संबंधित
चित्र बनाए गए।

8. विष्णु शर्मा के ग्रंथ पंचतंत्र का सर्वा. चित्रण मारवाड़
चित्रशैली मे किया गया।

चित्रकार
नारायण, छज्जू, सेफू, वीर जी, डालचन्द्र, अमरदास,
शिवदास, शंकरदास, माधोदास, देवदास, कालूराम,
रामाराम, किशनदास

/ /

2. किशनगढ़ चि. शै. (बणी-ठनी चि. शै.)
प्रादुर्भाव + स्वर्णकाल - सावंतसिंह (नागरीदास)
वृक्ष - केला
पशु - गाय
पक्षी - जलीय पक्षीयो का पंक्तिबद्ध चित्रण
- हंस, बतख, सारस, जलमुर्गाब
रंग - श्वेत गुलाबी
महिला चित्रण - कमल की पखुडी / कमान के समान आँखे
- सौंदर्य का सर्वा. चित्रण
- नाक में बेसरी आभूषण
- हाथ में अर्द्ध मुकुलित कमल कली

पुरुष चित्रण - मोती जडित श्वेत / बुंगिया पगड़ी
खंजर पक्षी के समान आँखे

विशेष -
- किशनगढ़ ठिकाणे की स्थापना - किशनसिंह द्वारा 1609 ई. में
- यहां का शासक सावंत सिंह वल्लभ सम्प्रदाय का अनुयायी था जो नागरीदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ
↳ नागर समुच्चय ग्रंथ लिखा
- ब्रजशैली का प्रभाव दिखाई देता है
- प्रेम, कला, भक्ति का चित्रण माना जाता है
- प्रकाश में लाने का श्रेय - डॉ. फैयाज अली, एरिक डिकसन
- कागज को आपस में चिपाकर मोटी परत बनाते हुए उस पर चित्र बनाए गए जिसे वसली चित्र कहा जाता है
- भंवरे का चित्रण इस चित्रशैली की प्रमुख विशेषता है

विषय वस्तु / चित्र -
1. बणी-ठणी - सावंत सिंह के दरबारी मोरध्वज निहालचन्द्र के द्वारा रसिक प्रिया / रसीक बिहारी / विलासवती (सावंत सिंह की प्रेमिका) का राधा के रुप में एक सुंदर चित्र बनाया गया जिसे बणी-ठणी कहा जाता है।

_/_/_

इस चित्र को एरिक डिक्सन ने "भारत की मोनालिसा" कहा
इस चित्र पर 5 मई 1973 ई. 20 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया,

2. चांदनी रात की संगोष्ठी - सावंतसिंह के समय
अमीरचन्द चित्रकार ने बनाया

3. गीत - गोविंद चित्र - कल्याणसिंह के समय लाडलीदास ने बनाया

4. झील, नौका-विहार, सरोवर-कमल, बाग-बगीचे उपवन आदि का चित्रण किया गया

चित्रकार -
मोरध्वज निहालचन्द, लाडलीदास, अमीरचन्द, बदनसिंह, छोटू, सुरध्वज, धन्ना, सीताराम, रामनाथ, नानकराम, सवाईराम, भूलराज,

3. अजमेर चि. शै. →
- वास्तविक स्वरूप - अजमेर के ठिकाणो और गांवो में.
- ठिकाणो में राजपूती संस्कृति और गांवो लोक संस्कृति से संबंधित चित्र बनाए गए
- यह चित्र शैली हिन्दू + मुसलिम + ईसाइयो की
इसे "ठिकाणा शैली" भी कहा जाता है

महिला चित्रण - मेंहदी लगे हाथो का चित्रण
पुरुष चित्रण - सिर पर राठौडी पगडी / मुगल पगडी का चित्रण

प्रमुख चित्र - राजा पाबू जी का चित्र
↳ जूनिया ठिकाने के चित्रकार चाँद पर द्वारा बनाया गया।

—/—/—

चित्रकार -

चांद - जुनिया ठि॰ जालासिंह ]
तैय्यब - सावर " नारायण ] खरवा ठिकाना
रायसिंह - चांद " उस्ना ]
माधोसिंह - मसुदा " सालिबा ] अजमेर (महिला चित्रकार)
अलीबक्स - अजमेर

4. बीकानेर चित्र शैली →

प्रादुर्भाव - रायसिंह
स्वर्णिम - अनूपसिंह

विशेष - रायसिंह के समय इस चित्र शैली पर मुगल प्रभाव पड़ा, रायसिंह दिल्ली से अलीरज़ा, रुकनुद्दीन सहित कुल 7 कलाकारों को बिकानेर लेआकर ये चित्रशैली प्रारंभ करता है।
- अनूपसिंह लाहौर से रामलाल, व हसन नामक चित्रकारो को बिकानेर ले आता है और इस चित्रशैली को विकसित करता है
- बीकानेर शासक सुजानसिंह के समय मुगल प्रभाव समाप्त होता है
- चित्रकार चित्रो पर नाम, तिथि अंकन करते थे।
- हमरन गोईट्स ने अपनी पुस्तक 'आर्ट एंव आर्किटेक्ट ऑफ बीकानेर' के माध्यम से बीकानेर चित्र शैली को लोकप्रिय बनाने का कार्य किया,
- जर्मन चित्रकार A.H. म्यूलर के कई चित्र बिकानेर संग्रहालय मे सुरक्षित है जिसमे प्रमुख चित्र पृथ्वीराज राठौड़ का है, जिन्हे जिनको महाराणा प्रताप को पत्र लिखते हुए चित्रित किया गया है

चित्रकार -

अलीरज़ा, रुकनुद्दीन, हसन, ईसा, रसीद, नूर मोहम्मद, शाह मोहम्मद, रामलाल, नत्थु, मुकुन्द, मुन्नालाल

_/_/_

विषय - वस्तु / चित्र -

1 आदिपुराण - इस शैली का सबसे प्राचीन
सबलसिंह के समय बना

2 उस्ता कला - मुस्लिमो ने (उस्ता जाति के) ऊँट की खाल
पर चित्र बनाए

3. मथेरणा कला - के कलाकारो ने धार्मिक चित्र बनाए

4. बरसात मे नाचते हुए खास पक्षी के चित्र बनाए

5. जैसलमेर चित्रशैली →
प्रादुर्भाव - हरराज, अखेराज
स्वर्णिम - मूलराज II

- इस शैली ने कभी भी बाहरी प्रभाव स्वीकार
नहीं किया किसी अन्य शैली का प्रभाव नहीं पड़ा

. सर्व. चित्र - लोद्रवा की राजकुमारी मूमल के

6. नागौर चित्रशैली →
- बुझे हुए रंगो का प्रयोग
- पारदर्शी वेशभूषा का प्रयोग
- वृद्धावस्था के चित्र

ढूंढाड स्कूल →

1. जयपुर चित्रशैली →
प्रादुर्भाव - सवाईजयसिंह
स्वर्णकाल - प्रतापसिंह
रंग - हरा
वृक्ष - पीपल, बट (बरगद)
पशु - हाथी, घोड़ा
पक्षी - मोर

Download More PDF's : Click Here

महिला चित्रण - मीनकृत आँखे
पुरुष " - दाढ़ी मूँछ रहित चेहरा
चेहरे पर चेचक के निशान

विशेष -

1. सवाई जयसिंह ने कला के विकास के लिए आमेर में 36 कारखाने बनाए, जिनमे से एक कारखाना चित्रकला से संबंधित था जिसे सूरत खाना कहा जाता है
2. ईश्वरीसिंह द्वारा सूरत खाने को आमेर से जयपुर लाया गया
3. सूरतखाने का सर्वा॰ विकास प्रतापसिंह के समय हुआ 50 से अधिक चित्रकार कार्य करते थे जैसे- गोपाल, हुक्मा, चिमना, लक्ष्मण, रामसेवक, सालिगराम
4. कला के विकास के लिए प्रतापसिंह ने गुणीजन खाना
रामसिंह द्वितिय द्वारा मदरसा-ए-हुनरी की स्थापना की।
5. आमेर के बाद सर्वा॰ मुगल प्रभाव इसी शैली पर पड़ा।
6. माधोसिंह प्रथम के समय चित्रकार साहिब रामजीदास, गोविन्द मुगल प्रभाव को कम करते हुए राजपूती परंपरा के चित्र बनाए
7. आदमकद चित्र, मुतों का चित्रण इस चित्र शैली की प्रमुख विशेषता है।
8. इसमें महिला व पुरुष की लम्बाई का उचित अनुपात देखने को मिलता है।
9. जयपुर चि॰ शै॰ का प्रभाव अ॰ उणियारा (टोंक) ईसरदा, शिवाड़, (स॰ मा॰), शीलाय, चौमु, सामोद (जयपुर) में है

_/_/_

विषय - वस्तु / चित्र -

1. मोहम्मद शाह - सवाई जयसिंह का दरबारी कवि
   - मुगल प्रभाव के सर्वा॰ चित्र बनाए
   ↳ फकीरो को भिक्षा देती ] शहजादी के चित्र
   कुरान पढ़ती

2. साहीबराम - सर्वप्रथम आदमकद चित्र बनाए गए (पोर्ट्रेट/ सबीह चित्र)
   - ईश्वरीसिंह, माधोसिंह, प्रतापसिंह का दरबारी कवि
   - पैहला चित्र इनका बनाया गया।
   - नृत्य करते राधा - कृष्ण का चित्र

3. लालचन्द - ईश्वरी, माधोसिंह I का दरबारी चित्र
   - हाथीयों की लड़ाई के चित्र बनाए

4. माधोसिंह I - गलता के मंदिरो, चन्द्रमहल (जयपुर), सिसोदिया रानी का महल, पुण्डरिक हवेली मे भित्ति चित्रण का कार्य किया।

5. वात्स्यायन के ग्रंथ कामसूत्र पर चित्र बनाए गए
6. इसमे हिंदू - देवी - देवताओ को कुर्सी पर बैठे हुए चित्रित किया

चित्रकार -

तिलोक, गंगाबक्स, रघुनाथ, साहीबक्स, सालिगराम, मोहम्मद शाह, गोपाल, हुक्मा, चिमना, रामसेवक, लक्ष्मण, रामजीदास, गोविन्द, लालचन्द

2. आमेर चित्रशैली →

प्रादुर्भाव - मानसिंह

स्वर्णकाल - मिर्जाराजा जयसिंह

रंग - प्राकृतिक (हीरामीच, कालुशा, गेरू, पेवड़ी, सफेदा)

विशेष -

- आमेर चि.शै. जयपुर चि. शै. का ही प्रारंभिक रूप माना जाता है।
- प्रारंभिक केन्द्र - औरंगाबाद
- सर्वप्रथम व सर्वाधिक मुगल प्रभाव पड़ा

विषय वस्तु / चित्र -

1. आदिपुराण चित्र - इस शैली का प्राचीन चित्र
   - पृथ्वीराज कच्छवाह के समय चित्रित
   - चित्रकार (इसका) - पुष्पदन्त
2. मानसिंह I - यशोधरा चरित्र के चित्र
   - अकबर के लिए रज्मनामा के 169 चित्र बनवाये
     ↓
     (महाभारत का फारसी अनुवाद)
     अकबर के समय "बदांयुनी" द्वारा किया गया
3. मिर्जाराजा जयसिंह - कवि बिहारी के ग्रंथ बिहारी सतसई पर चित्र बनाये गए
   - रानी चन्द्रावती के लिए रसिक प्रिया, बैलि कृष्ण रूक्मणी ग्रंथो को चित्रित करवाया।
4. लैला - मजनु की प्रेम कहानी पर चित्रण

चित्रकार -

पुष्पदत्त, हुकमीचन्द, मुरली, मुन्नालाल

_/_/_

3. उणियारा चित्रशैली →
वर्तमान - टोंक
- जयपुर रियासत का एक ठिकाना था जहाँ कच्छवाह वंश की नरूका शाखा का शासन था
- उणियारा के शासक सरदार सिंह के काल को प्रादुर्भाव व स्वर्णकाल माना जाता है।
विषय वस्तु / चित्र →
धीरबक्स - हिन्दू देवीदेवताओ के चित्र बनाए
- सीता राम, लक्ष्मण, हनुमान के चित्र प्रमुख हैं।
केशव के ग्रंथ कविप्रिया पर चित्र बनाये गये
चित्रकार -
धीरबक्स, धीमा, बख्ता, रामलखन, केशव, मीर, काशीनाथ

4. अलवर चित्रशैली →
- प्रादुर्भाव - प्रतापसिंह, बख्तावर सिंह
स्वर्णकाल - विनयसिंह
पुरुष चित्रण →
- आम जैसा चेहरा
- सिर पर टोपी, गले में रुमाल का चित्रण
विशेष →
- माधोसिंह I के समय नरूका वंश के प्रतापसिंह ने 1775 में जयपुर से स्वतंत्र होकर अलवर रियासत की स्थापना की।
- प्रतापसिंह जयपुर में शिवकुमार, डालूराम 2 चित्रकारों को अलवर लेकर आया, जिन्होंने राजगढ़ स्थित शीशमहल में भित्तीचित्रण का कार्य कर अलवर चित्रशैली प्रारंभ की
- इस शैली पर अंग्रेजी, यूरोपियन, दिल्ली शैली, सबका प्रभाव पड़ा।
- इसमें हासिया (बॉर्डर) पर चित्र बनाए गए जिसे बसलो चित्र कहा जाता है।

/ /

विषय - वस्तु / चित्र →

1. बख्तावर -

- इनके समय चित्र बनाये गए - बालूराम, सालगा, सालिगराम, बलदेव ने राजगढ़ के शीश महल में सर्वा. भित्ति चित्र बनाए

- इनके समय जंगल में बाबो व साधुओं के साथ धर्म की चर्चा करते हुए राजा का चित्र बनाया गया

2. विनयसिंह -

- इनके समय चित्रकार बलदेव गुलामअली ने शेखसदी के ग्रंथ गुलिस्ता पर चित्र बनाए

- इनके समय अलवर की महलो में गणिकाओ / वैश्याओ के सर्वा. चित्र बनाए

3. बलवन्तसिंह -

- इनके समय चित्रकार सालिगराम, बक्साराम, नन्दराम, छोटे लाल, जमनादास ने पोथी ग्रंथो पर सर्वा. चित्र बनाए।

4. शिवदान -

- कामकला / काम शास्त्र संबंधित चित्र बनाए गए

इनके समय का नफीरी वादन चित्र सबसे प्रमुख है

5. मंगलसिंह -

- इनके समय चित्रकार उदयराम मूलचन्द्र ने हाथीदांत पर चित्र बनाए

6. जयसिंह -

- इनके समय रामप्रसाद, रामगोपाल, राम सहाय, जगमोहन, जेवोलिया प्रमुख चित्रकार थे जिन्होंने अलवर ची. शैं. को अंतिम समय तक जीवित रखा।

_/_/_

5. शेखावाटी चित्र शैली →
- भित्ति चित्रण के लिए प्रसिद्ध है
- राज. मे शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति चित्र सबसे प्रसिद्ध व सुन्दर हैं जिनमे लोकसंस्कृति की झांकी देखने को मिलती है
- भित्ति चित्र के लिए शेखावटी क्षेत्र को ओपन आर्ट गैलेरी / खुली कला दिर्घा कहा जाता हैं
- इस शैली पर 2012 मे 20 रु. का डाक टिकट जारी किया गया

1. जोगीदास की छतरी - उदयपुरवाटी
   ↳ के भित्ति चित्र शेखावटी क्षेत्र के प्रारम्भिक भित्ति चित्र माने जाते हैं
   जिनका प्रमुख चित्रकार - देवा

2. नदीन - ला - प्रेंस - (फ्रांस निवासी) -
   शेखावाटी क्षेत्र मे स्थित फतेहपुर कि हवेलीयो के भित्तिचित्रो को संरक्षण प्रदान करने का कार्य किया

3. शे. क्षेत्र मे भित्ती चित्रण के लिए मुख्यत: कत्थई, नीला, गुलाबी रंग लिया गया हैं।

भित्ति चित्रण के लिए 3 पद्धतियां प्रयोग मे ली जाती हैं -

(i) फ्रेस्को बुनो -
   दिवार पर ताजा प्लास्तर कर गिली दिवार पर ही चित्रकारी की जाती हैं।
   (आरायश) - मुगलकाल मे
   (आलागीला) - आमेर
   "(मणा) - शेखावाटी क्षेत्र मे

(ii) फ्रेस्को - सेको -
   प्लास्तर की गई दिवार को पहले सुखाया जाता हैं सुखने के बाद चित्रकारी की जाती हैं।

(iii) सामान्य भित्ति चित्र →
बिना पलास्तर की दिवार पर ही चित्रकारी की जाती है

Note 1. भित्ति चित्रण प्रारंभ - आमेर
2. सर्वाधिक भित्ति चित्रण - हाड़ौती
3. प्रसिद्ध व सुन्दर भित्ती चित्रण - शेखावाटी

हाड़ौती स्कूल →

1. बूंदी चित्रशैली →
प्रादुर्भाव - शत्रुशाल (छत्रशाल)
स्वर्णिम काल - उम्मेद सिंह
रंग - नीला, श्वेत, गुलाबी, हिंगलु
वृक्ष - खजूर
पशु - हीरण, घोड़ा, शेर, बंदर
पक्षी - मोर
महिला चित्रण -
- आम्रपत्र (आम्र वृक्ष के पत्ते) के समान आंखे
- आंखो के ऊपर-नीचे समातंर रेखाओ का चित्रण
पुरुष चित्रण -
- झुकी हुई पगड़ी का चित्रण
विशेष
- उम्मेदसिंह ने बूंदी के राजमहलो मे चित्रशाला का निर्माण करवाया जिसे भित्ति चित्रों का स्वर्ग कहा जाता है।
- बूंदी के शासक भावसिंह, अनिरुद्ध सिंह के समय इस शैली पर दक्षिणी भारतीय शैली का प्रभाव पड़ा,
- पक्षियो के सर्वा॰ चित्रण के कारण बूंदी चित्रशैली को "पक्षि चित्रशैली" कहा जाता है।
- इस चि॰ शैं॰ मे रंगो से ज्यादा रेखाओं को महत्व दिया है।
- इसमे सामंती रहन-सहन सामंती वैभव के चित्र बनाए गए। इसलिए इसे "सामंती शैली" भी कहा जाता है।

__/__/__

विषय - वस्तु / चित्र →

1. शत्रुशाल -
बूंदी के रंगमहल मे बनाए गए भीति चित्र इस शैली के प्राचीन / प्रारंभिक चित्र हैं।

2. तीज - त्यौहार पर चित्र बनाए।

3. मतिराम के ग्रंथ "रसराज" पर चित्र बनाए गए।

4. आसमान मे उमडते बादल, कडकती बिजली, तेज बारीश के चित्र बनाए गए

5. तेज बारीश मे नाचते मोर, उच्छल - कूद करते वानरो के चित्र बनाए गए

6. उम्मेदसिंह का सुअर का शिकार करते हुए चित्रण किया गया

चित्रकार -
सुरजन, अहमद अली, रामलाल, श्री किशन, साधुराम

2. कोटा चित्रशैली →
प्रादुर्भाव - रामसिंह - I
स्वर्णिम - उम्मेदसिंह - I

महिला चित्रण -
- मृग / हिरण के समान आँखे

पुरुष चित्रण -
- मोतीजड़ित आभूषणो का चित्रण

चित्र -

1. शिकार दृश्यो का सर्वा. चित्रण - (महिला / रानियों द्वारा)

2. भीमसिंह -
वल्लभ सम्प्रदाय के चित्र बनाये गये

3. गुमानसिंह -
चित्रकार डालु ने रागमाला के सबसे बडे चित्र बनाए।

4. पैर से कांटा निकालते हुए महिला का चित्र बनाया गया।

5.

चित्रकार -
डालू, लच्छीराम, गोविंद, नूरमोहम्मद, रघुनाथ

आधुनिक चित्रकार →

1. कुन्दलाल मिस्त्री - उदयपुर
- "आधुनिक राजस्थानी चित्रकला का जनक"
- इन्होने महाराणा प्रताप का एक प्रसिद्ध चित्र बनाया जिसकी प्रतिकृती भारत चित्रकला के पितामह/जनक (रवि वर्मा) द्वारा बनाई गई।

2. रामगोपाल विजयवर्गीय - बालेर (सवाई माधोपुर)
- राजस्थान में एकल चित्र प्रदर्शनी को प्रारम्भ करने का श्रेय इन्ही को जाता हैं।
- इनका प्रमुख विषय नारी था
- इन्हे 2 सम्मान प्रदान किये गये
  1970 - ललित कला अकादमी (जयपुर) - कलाविद
  1984 - पदमश्री
- इनके द्वारा अभिसार निशा नाम से साहित्यिक रचना भी की गई।

-

3. गोवर्धनलाल जोशी - कांकरोली (राजसमंद)
- (बाबा - उपनाम)
- इन्होने आदिवासी जीवन/संस्कृति पर चित्रकारी का कार्य किया।
- सर्वा० चित्र भील संस्कृति पर बनाए इसलिए इन्हें "भीलो का चितेरा" भी कहा जाता हैं।
- प्रमुख चित्र - बारात

__/__/__

4. परमानन्द चोयल - कोटा
"भैंसो का चितेरा"

5. सुरजीत कोर चोयल - जयपुर
"भारत की प्रथम आधुनिक महिला चित्रकार"

6. जगमोहन माथोडिया - जयपुर
"श्वान चितेरा"

7. सौभाग्यमल गहलोत - जयपुर
(नीड़ का चितेरा) - पक्षियों का घोंसला

8. वीरबाला भावसार - बाँसवाड़ा
रेत, फेविकोल से चित्र बनाने की नई शैली को विकसित किया।

9. देवकिनन्दन शर्मा - अलवर
इन्होंने प्रकृति व पशु-पक्षियो पर चित्रकारी का कार्य किया इसलिए इन्हे "द मास्टर ऑफ लिविंग ऑबजेक्ट" कहा जाता है

10. भूरसिंह शेखावत - बीकानेर
इन्होंने ग्रामीण लोक जीवन/संस्कृति के सर्वा॰ चित्र बनाए
↳ (गाँव का चितेरा)
स्वतंत्रता सेनानियो/शहीदों के भी चित्र बनाए।

11. ज्योतिस्वरूप शर्मा -
चमड़े पर चित्रकारी के लिए प्रसिद्द

## राजस्थान की हर प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी

❖ राजस्थान सामान्य ज्ञान के नोट्स डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए **इमेज** पर क्लिक करें --

❖ राजस्थान की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण नोट्स **Free** डाउनलोड :-

❖ राजस्थान कला एवं संस्कृति, भूगोल, इतिहास सभी के नोट्स **Free** डाउनलोड करने का एकमात्र **Google** वेबसाइट :- ***Rajasthanclasses.in***

Rajasthanclasses.in

हर भर्ती की न्यूज सबसे पहले..

यहां उपलब्ध रहेगी

Latest News : Get Link

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए

गूगल सर्च करें या क्लिक करें

Google

rajasthanclasses.in

Telegram

चैनल ज्वॉइन करें

YouTube पर

ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

हिंदी व्याकरण GK
महत्वपूर्ण प्रश्नों की PDF
PDF : Get Link

भारत सामान्य ज्ञान
महत्वपूर्ण प्रश्नों की PDF
PDF : Get Link

विज्ञान सामान्य ज्ञान
महत्वपूर्ण प्रश्नों की PDF
PDF : Get Link

राजस्थान GK 2025
महत्वपूर्ण प्रश्नों की PDF
PDF : Get Link

राजस्थान GK 2025
नोट्स PDF ....
PDF : Get Link

Click Here : Get More PDF